159 P
639
M

Rashtriya Alha 1041
1940
S R/801

राष्ट्रीय-आल्हा

स्वाभिमान कँह गयो बने दुष्टन के जो तुम तावेदार ।
पड़ी लाज पै गाज अरे थू थू इस जीवन पै धिक्कार ॥

प्रकाशक:—

पं० महादेव प्रसाद तथा राजाराम जी त्रिपाठी

बैरी अकबरपुर ।

लेखक:—

मनीराम शर्मा ।

मण्डल कांग्रेस कमेटी, बैरी अकबरपुर,

कानपुर ।

वि० सं० १९९६ मूल्य =) अगस्त १९३९ ई०

मुद्रक—विजय फाइन आर्ट प्रेस, बनकुटी कानपुर

891.431
Sh23R

316

1291/10/21

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 639
Date 15.12.71
GOVT. OF INDIA

❀ वन्देमातरम् ❀

भारत माता की जय

ओंकार जगदीश निरंजन, मुनि दुख भन्जन नाथ हमार।
असुर निकन्दन मुनि मन रञ्जन, भञ्जन सकल को भार ॥ १ ॥
करत बन्दना बन्देमातरम, भारत जननी शीश नवाय।
देव सहारा मनीराम को, शर्मा बैठि गयो सर नाय ॥ २ ॥
भारत माता तोहिं सुमिरत हौं, मेरे कण्ठ बिराजौ आय।
निज मति दुक्ख रूप तौ गाथा, माता कहिहौं सकल सुनाय ॥ ३ ॥
दयानन्द गुरु दत्त बहादुर, पंडित लेखराम सरनाम।
महादेव, गोविन्द, रानाडे, दादाभाइ तुम्हें परणाम ॥ ४ ॥
बीर गोखले दृढ़ पर्वत सम, औ खुदि राम बोस सरनाम।
फांसी चढ़यो न कछु भय खायो, निर्भय चले गये सुरधाम ॥ ५ ॥
शेर मरहटा बीर पिंगुले, अरु करतारसिंह सरदार।
निर्भय शूली चढ़े हंसत ही, धनि २ कहत सकल संसार ॥ ६ ॥
रासबिहारी और भगतसिंह, अरु सूफी अम्बाप्रसाद।
अरबिंद घोष सुरेन्द्र बनर्जी, करि सुधि होत चित्त आल्हाद ॥ ७ ॥

बहु तर्क बीर प्रतापी जग में, लाला हरदयाल से बीर।
मुक्त आत्मा हाय तिलक की, करि सुधि बहत नैन से नीर ॥ ८ ॥
देशभक्त श्रद्धानन्द स्वामी, नामी वीर भये संसार।
बिछुरत दुक्ख भयो भारत को, रैयत बिलखत जार बेजार ॥ ९ ॥
देशभक्त पृथ्वी में नामी, हैं राजा महेन्द्रप्रताप।
प्रेम महाबिद्यालय खोल्यो, हैं धनि धन्य २ हैं आप ॥ १० ॥
धनि सावरकर बन्धु विनायक, भारी कठिन तपस्वी आप।
जीवन बहुत जेल में बीत्यो, झेले बड़े बड़े सन्ताप ॥ ११ ॥
कहां गये पन्जाब केशरी, हा! भारत के शेर हमार।
लाज पती के तुम रखवैया, नैया छांड़ गये मंझधार ॥ १२ ॥
पैर पिछाड़ी तुम डारयो न, लाठी खाई हृदय मंह आय।
वही कष्ट ते प्राण निकरि गे, मरिके अमृत गये पिलाय ॥ १३ ॥
असफाकउल्ला अरु रोशनसिंह, करनी लखत सकल जग हेर।
रामप्रसाद, राजेन्द्र लाहिड़ी, ये काकोरी केश के शेर ॥ १४ ॥
हंसत २ फांसी पर चढ़ गये, मनमें नेक नहीं घबड़ान।
कांपी अवनि सिंधु थहरान्यो, खलबल पड़ी गगन हहरान ॥ १५ ॥
जितेन दास बीर दधीच सम, कलियुग फेर लयौ औतार।
अनशन कीन्ह देह तब त्यागी, तप बल कांप उठी सरकार ॥ १६ ॥
६३ उपास कियो जेल में, भारत मेकस्विनी हैं आप।
नहिं ब्रत भङ्ग कियो काहू विधि, सहि गये बहुत कठिन सन्ताप ॥ १७ ॥

आखिर जेल माँहि तन त्यागो, धनि धनि तुम्हें धन्य वरवीर ।
नौकर शाही की करनीं पर, सबके झरत नैन से नीर ॥ १८ ॥
भगतसिंह बटुकेश्वर बाबू, तुम सम कमल भये संसार ।
जाय चितायो तुम इर्विन को, शिमला शिखर बीच दरबार ॥ १९ ॥
बायसराय मञ्च पर बैठो, प्रेसीडेन्ट डटो सरताज ।
बीच सभा में निधड़क पैठे, डट के करी कठिन आवाज ॥ २० ॥
दुक्ख देश को लखि आंखिन ते, नहिं सह सके आप सरदार ।
धरि ललकारो बाइसराय को, कौंशल मध्य कही हुँकार ॥ २१ ॥
सौ सौ उपास किये जेल में, वेसुध खाट पड़े थे आप।
माफी मांगी नहिं बीरन ने, दीन्हें अङ्गरेजन बहु दाप ॥ २२ ॥
भ, ब शब्द पड़े दोनों के, दोनों एक रूप दिखलांय।
राम लक्ष्मण की सी जोड़ी, यह ब्रह्मा ने दई मिलाय ॥ २३ ॥
भ से भरत, भगतसिंह बनि हैं, भगि हैं बेइमान बदकार।
ब, से विष्णु रूप, बटुकेश्वर, लेकर चक्र वही संसार ॥ २४ ॥
भ, से भला होइ भारत का, ब से बल पैहैं नर नार।
उठो तिरङ्गा प्यारा झण्डा, हा हाकार मची संसार ॥ २५ ॥
बुधि बल देव आप शर्मा को, माथो तुम्हें नवावत आज।
हौ सब लायक बुधि बल दायक, नायक सकल जगत सरताज ।२६।
पण्डित मोतीलाल नेहरू, जिनके पुत्र जवाहरलाल ।
मोती जवाहर की जोड़ी है, जिन यश बहुत, बुद्धि बेहाल ॥ २७ ॥

बोने सिंहासन पर बैठत से, लाखन रुपया डारे कमाय।
करी अमीरी सबसे बढ़ कर, ओड़ी कहीं नहीं दिखलाय ॥ २८ ॥
हरिश्चन्द्र सम दानी बनिगे, त्यागन, तन, मन, धन सब कीन।
घर तक बैठन को राख्यो ना, आनन्द-भवन दान कर दीन ॥ २९ ॥
त्याग मूर्ति की पदवी पाई, नामी वीर भये संसार।
बहुत यातना सही जेल की, कहत में हिरदो फटत हमार ॥ ३० ॥
बल्लभ भाई विट्ठल भाई, पटेल दोनों बराबर क्यार।
बिना ताज गुजरात बादशाह, तुमको जान गयो संसार ॥ ३१ ॥
लगो मोर्चा बडोली में, तब तुम अजमत दई दिखाय।
टका इजाफा को पायो ना, रह गई गवर्नमेंट घबराय ॥ ३२ ॥
पदवी पाई सरदारन की, तुम सरदार वीर गुजरात।
नाम आपको जग जाहिर है, सुनतै गवर्नमेंट घबड़ात ॥ ३३ ॥
सुभाष बाबू शेर बङ्गाली, तुम यश का विधि कहौं बनाय।
धनि २ राष्ट्रपती भारत के, हौ सरताज बहादुर राय ॥ ३४ ॥
जे० एम० गुप्ता शेर रूप हैं, सतीनसेन बहादुर बीर।
चार महीना अनशन कीन्हों, नामी सत्य सिंधुवर धीर ॥ ३५ ॥
बाबा गुरुदत सिंह पञ्जाबी, खासो जामवन्त दिखलाय।
करि धन अर्पण अफ्रीका में, सब भइयन को लाये लिवाय ॥ ३६ ॥
गोली खाई कलकत्ते में, बजबज जहाज के दरम्यान।
फाटि कलाई गई बाबा की ऐसो मचो कठिन घमसान ॥ ३७ ॥

तबहूँ प्रण अपनो नहिं त्यागो, हरदम डटो रहो सरदार।
करूं बड़ाई क्या मुँह लेकर, तुमको धन्य २ सौ बार ॥ ३८ ॥
धन्य मालवीय देश पूज्य हो, जिन विद्यालय दियो खुलाय।
अक्षय खम्भ गड़े काशी में, जग में लीन्हों नाम कमाय ॥ ३९ ॥
खड़गसिंह मंगलसिंह आदिक, डाक्टर वीर रूप सतपाल।
डाक्टर किचलू बीर बहादुर, जिन बल गवर्नमेंट बेहाल ॥ ४० ॥
यू० पी० प्रधान गणेशशङ्कर, नामी वीर कानपुर क्यार।
फतह बरेली निज बल कीन्हों दब गयो वीर पाल सरदार ॥ ४१ ॥
प्रताप को परताप बढ़ायो, जग में कीन्ह अखिल परचार।
दब कर बात कबहुँ ना कीन्हीं, हरदम देत रहे ललकार ॥ ४२ ॥
सब के मनपति बने आप ही, शङ्कर बन कल्यान करि दीन।
निर्भय डमरू बजी कानपुर, कर में सत्य त्रिशूलहु लीन ॥ ४३ ॥
दबे हुकूमत को कबहूँ ना, हरदम देत रहे फटकार।
निज बल सचेत कानपूर करि हँसि के पहुँचे कारागार ॥ ४४ ॥
मुस्लिम, हिन्दू दोनों पागल, बनिगे कानपूर दरम्यान।
तीन दिवस लौ चढ़यो शनीचर, दोनों के शीश चढ़ो शैतान ॥ ४५ ॥
बढ़े एकता दोउ भाइन में, बढ़िके शीश चढ़ायो जाय।
मोह त्यागि नश्वर शरीर को, आगे सीना दियो अड़ाय ॥ ४६ ॥
इन्द्र रूप राजेन्द्र बिहारी, बाबू जगत नरायण लाल।
भौ भूडोल सहायता कीन्हीं, हौ सच्चे माता के लाल ॥ ४७ ॥

माता कस्तूरी की खुशबू, सारे देश रही है छाय।
सर सरोजिनी भरयो प्रेम को, कमला कमल गई खिलवा ॥४८॥
वीर सासु की वीर बहू ये, आखिर दम तक पैर अड़ाय।
निर्भय बिचरी भरत खण्ड में, स्वराज्य मार्ग गई बतलाय॥ ४९ ॥
सत्यवती सब जग में जाहिर, जिन नारिन में करो प्रचार।
पार्वती पबत सम दृढ़ हैं अचला सबला रूप अपार ॥ ५० ॥
खां साहब फ्रांटियर गान्धी, नामी हैं अब्दुल गफ्फार।
करूं बड़ाई किस जबान से, हिन्दू मुस्लिम के सरकार ॥ ५१ ॥
मन मोहन मन हरण गान्धी, तुम भारत के प्राण अधार।
चांद करम ये बने करमचन्द, तुम सम कौन भयो संसार ॥ ५२ ॥
निज बल अफ्रीका सर कीन्हीं, भारी कष्ट सहे तुम जाय।
परवासी भारत के वासी, सर से टिकट दियो हटवाय ॥ ५३ ॥
भारतवासी गुलाम बनकर, सामी❀ कुली रहे बहलाय।
ट्रान्सवाल नेटाल आदि में, तुमने झण्डा दियो गड़ाय॥ ५४ ॥
तज बीमारी में पत्नी को, हँस २ पहुँचे कारागार।
अफ्रीका में हल्ला मचिगौ, ऐसी कठिन दइ ललकार ॥ ५५ ॥
कठिन यातना सही आपने, खाई मार बिदेशिन क्यार।
सत से डिगे न एक इञ्च तुम, गांन्धी तुम्हें धन्य सौ बार॥ ५६ ॥
सर अफ्रीका करी आपने, सत्यागृह को शङ्ख बजाय।
बज गयो डङ्का दूर देश में, सारे बैठ गये खिसियाय ॥ ५७ ॥

❀ अफ्रीकन्स भाषा का एक शब्द, सामी = गुलाम

देखि अधोगति चम्पारन की, तब अफ्रीका दयो बिसार।
सिलहा गिरन के मोर्चा पर, गांधी डटो आय हुंकार ॥ ५८ ॥
निर्भय विचरे चम्पारन में, जारी जांच दइ करवाय।
रिपोर्ट तयार भई जांच की, जाके पढ़े चित्त अकुलाय ॥ ५९ ॥
सारो किस्सा हम गइने ना, ज्यादा लिखे बात बढ़ि जाय।
आँच कमेटी सूदम हाल को, दुइ बातन में देउँ बताय ॥ ६० ॥
सिलहा गोरन की की करनी को, लिखतै कलम बन्द ह्वै जाय
किसी सवारी पर चढ़ि कोई, अथवा छाता लगाये जाय ॥ ६१ ॥
निकलै बीच सड़क खेवन को, जानौ मौत पहूँची आय।
पकरि बुलावैं फर बँगला में, हण्टर चर्सा देयँ उड़ाय ॥ ६२ ॥
पकरि २ पानी में डोवैं, ठाढ़े मुर्गा देंय बनाय।
कान खिचावैं मूछ उखारें, फिर परतिज्ञा लेहिं कराय ॥ ६३ ॥
दबी क़ौम की कौन चलावे, तनु ऊँचेन के सुनौ हवाल।
ब्राह्मण क्षत्रिन की तिरियन को, घर से जबरन लेंय निकाल ॥६४ ॥
पकरि चोटइया खींचत आवैं, लाखन गाली सुनावत जांय।
खेत निकइबे को कामें मैं, जबरन खुरपी देंय धराय ॥ ६५ ॥
कठिन दुर्दशा चम्पारन की, ज्यादा कौन कहे अब गाय।
इतने ही में श्रोतौ समझौ, ज्यादा लिखे ग्रन्थ बढ़ि जाय ॥ ६६ ॥
सत व्रत धारी नर अवतारी, गांधी वहाँ विराजो आय।
अत्याचार मेंटि छण में दी, सत्याग्रह को बल दिखलाय ॥ ६७ ॥

बजी दुन्दुभी चम्पारन में, गोरा बहुत गये घबड़ाय।
आसन हिल गये रावन दल के, रामा दल की विजय दिखाय ॥६८
जब जब वार भई गाँधी की, सर से उतरो भार अपार।
अनन्द बधैया घर घर बाजो, गोरा बिलखे जार बेजार ॥ ६९ ॥
सुन्दर देश बनो दुखिया सब; हरिजन बिलखे जार बेजा।
ऊँच नीच को भेद भाव सब, धरि अग्नी में दयो प्रजार ॥ ७० ॥
ईसा कहो मुहम्मद बोलो, चाहे राम कृष्ण कहि लेव।
शङ्कर स्वामी बुद्ध महात्मा, चाहे औन नाम धरि देय॥ ७१ ॥
भेद भाव भारत को मेटो, लोहा पारस दयो बनाय।
क्रिया हालि गौ परदेशिन को, ऐसो मन्त्र दयो बतलाय ॥ ७२ ॥

❀ कवित्त ❀

देश प्रेम जाति प्रेम नित्य नेम त्यागि कर,
हानि नांहि अस्पताल औषधादि खाये ते।
जगन्नाथ भात खात छूत छात चली जात,
छूत नाहिं मानी जात रेल में छुवाये ते।
दूध घी चमार को न खात लोग गाँव बीच,
शुद्ध शीघ्र होत है बजार बीच जाये ते।
बेबरी के बेर खाये भ्रम की गई न जाति,
आजु जाति-जाति है जाति ये उड़ाये ते।

भारत के हम और हमारा भारत, रटें सभी यह मन्त्र ।
ठुकरादें दासता छूतपन, बन कर विचरें वीर स्वतन्त्र ॥ ७३ ॥
धन्य भवानी भारत माता, और भगवान तिलक महराज ।
धन्य सूरमा सब स्वदेश के, जिन तन दियो देश के काज । ७४ ।
फिर पद बन्दौ शिवशङ्कर के, गङ्गा शीश रही लहराय ।
हेत देश जो तन मन देवैं, तिनको बार बार सर नाय । ७५ ।
राजा रामचन्द्र को ध्यावैं, दीन्हो रावण नाश कराय ।
बन्दौ कृष्ण दीन हितकारी, कंसहि मारयो खेल खिलाय ॥ ७६ ॥
शिवा प्रतापहिं मनमें सुमरौं, दुश्मन जाय सनाका खाय ।
गुरू गोविंद और छत्र साल को, मनमें लीजै ध्यान लगाय । ७७ ।
झांसी वाली महरानी की, बीरति बेलि नित्य हरियाय ।
हिंदू, हिंदी हिंद देश की, जिनने लीन्हीं लाज बचाय ॥ ७८ ॥
नाना साहब बिठूर वाले, बाजीराव पेशवा वीर ।
अब भी खण्डर ब्रह्मावर्त को, रोवत खड़े सुनावत पीर ॥ ७९ ॥
वीर जवाहर नाहर सुमिरौं, शङ्कट कटक छार ह्वै जाय ।
रूस के लेनिन तुम का सुमिरौं, अन्यायी दल जाय बिलाय ।८०।
भारत माता के पद बन्दौं, जाते मनुज मुक्त ह्वै जाय ।
जो विश्वास होय तौ देखौ, मनुस्मृती को शीघ्र उठाय ॥ ८१ ॥
एक मुक्त वह योगी होवे, स्वांसा साधि समाधि लगाय ।
उत्तम मुक्ति बीर वह पावे, हेत देश जो रण मरि जाय ॥ ८२ ॥

है महान गति इन बीरन की, सारे वेद शास्त्र बतलांय।
यहै कृष्ण गीता में कहिगे, याहै मनू गये बतलाय ॥ ८३ ॥
देश भक्त साधुहिं सम मानौं, राखौ बीर धर्म भी साज।
छांड़ि धर्म जो अधरम करिहौ, गिरिहै देश जाति गाज ॥ ८४ ॥
गावो साका रन सूरन को, सुनके फरकि उठें भुज दण्ड।
थर २ थर २ लन्दन कांपै, डोलै सात द्वीप नव खण्ड ॥ ८५ ॥
कठिन तपस्या है गांधी की, तप के मूर्तिमान अवतार।
माहिल जैचन्द्र सभी बिकल हैं, मनमें कँपी ब्रिटिश सरकार ॥
सत्याग्रही सूरमा बांके, अब सजि के है गए तयार।
एकै बानी सब बोलत हैं, है स्वतन्त्रता ध्येय हमार ॥ ८७ ॥
यकदिन जनम लेत सब जगहै, यक दिन मरे सकल संसार।
जीवन मरन सार उनका है, जो करि जांय देश उद्धार ॥ ८८ ॥
पानी पवन जहां पर पायो, पायो अन्न दूध दधि पान।
जन्म अकारन भूलि जांय जो, जनमभूमि को हम अहसान ८९॥
कायर कुटिल मरें खटिया पर, रन में जूझैं सिंह सुपूत।
चलैं अप्सरा वर माला लै, आगे लेंय स्वर्ग के दूत ॥ ९० ॥
हल्ला हुइगो गांव गांव में, कांग्रेस डौंड़ी दई पिटाय।
आई मुक्ति लेन कै बेरा, बढ़ि के चलौ अगाड़ी भाय ॥ ९१ ॥
छैल चिकनियां बनि तुम घूमत, दुनियां तुमका कहै गुलाम।
आवे काम न जो गाढ़े मां, तौ मिटि जाय लोक से नाम ॥ ९२ ॥

सुनतै लाली चढ़ी मुखन पै, मन मां उमँगि पड़े सब बीर।
कोऊ हिमालय की दिशि भिरिगे, कोऊ भिरे समुन्दर तीर ।९३॥
पहला हल्ला वस्त्र बिदेशी, दूसरि भई ननम की लूटि।
तीसर धावा भा शराब मां, छक्के गये लाट के छूटि ॥ ९४ ॥
डण्डा बरसे लाठी बरसी, सत्याग्रही शीश पर लेंय।
भिड़े सूरमा भारतवासी, कालहु को जो बाउँ ना देंय ॥ ९५ ॥
भारत वीर पड़ अन्दोलन मां, ऊधम जोति रही सरकार।
बन्द जबानैं कीन्हीं सबकी, औ सब बन्द करे अखबार ॥ ९६ ॥
अगुआ धंधे पड़े जेलन मां, पीसैं चक्की कूटैं बान।
सत्याग्रही हटे ना पीछे, बिन हथियार करैं मैदान ॥ ९८ ॥
कठिन समैया आया भैया, अब प्रण करि हौ आव तयार।
नाम लिखाओ सेवा दल में, समया मिले न बारम्बार ॥ ९९ ॥
तुम्हें उबारन के खातिर भा, गांधी बाबा का औतार।
बनौ मेम्बर खद्दर पहिनौ, तौ है बेड़ा पल्ले पार ॥ १०० ॥
शूली सहो सेल सहि जाओ, पर ना सहौ देश अपमान।
धीरज धारो अब तनको ना, उमड़ो भारत वीर जवान ॥१०१॥
जो तुम मरिहौ सत्य समर मां, युग २ साखा चलै तुम्हार।
जो दबि बैठे इस अवसर मां, तुम्हरे जीबे को धिक्कार ॥ १०२ ॥
घर २ चरखा चलैं गनागन, सूत के गोला होंय तयार।
बारैं गन केवार घुस्स बनि, दर दर खद्दर के अम्बार ॥ १०३ ॥

घर की कती बुनी खादी हो, मिल के बस्त्र देहु सब त्यागि।
खून मजूरन का इन मा है, चर्बी गाय सुवर कै लागि ॥१०४॥
डटो सत्य पर मेम्बर बन कर, वीरो विजय तुम्हारे हाथ।
विजय धर्म के साथ रहत है, औ है धर्म सत्य के साथ।१०५॥
प्राचीन सभ्यता बुधि बल विद्या, सब मिट्टी में दई मिलाय।
अस्त्र छीन कर दियो अपाहिज, जनखा हिजड़ा दियो बनाय १०६
सिक्के की दर ऐसी कर दई, औ घाटे में देश हमार।
कोटिन रुपया बिना परिश्रम, प्रतिदिन जाय समुन्दर पार।१०७
इतना कर जमीन कौ बढ़िगौ, किसान पिसकर बने पिसान।
नमकहरामी अब करियो ना, सरपर चढ़ो बैठ शैतान ॥ १०८ ॥
कृषय मंजूरो करौ सङ्गठन, सत्याग्रह का शङ्ख बजाय।
जयचन्द्र माहिल और विभीषण, तीनों वंश नाश ह्वै जाय ॥
वीर किसानों होशियार हो, साका गाओ सूरमन क्यार।
सच्चे मेम्बर चुनौ हवौ ना, मेटो जयचन्दी दरबार ॥ ११० ॥
किये गुलामी यह मुंह भारो, खड़हर रोवे कनौजी क्यार।
भारत बन की लकड़ी हुइ के, बनिगा बेंट कुल्हाड़ी क्यार १११
आजौ माहिल जयचन्द घूमैं, सारी लाज शरम बिसराय।
हल्ला बोलो वीर किसानों, दो दुष्टों को सीख सिखाय ॥ ११२ ॥
पन्थ विभीषण को फैलाओ, लिहिन गुलामी का मुड़यान।
बीर जाफरन की जफड़ी मिलि, भारत भारत दीन कहान ११३

एक मास सब तुम्हरे चुसिगौ, हड्डी बची किसानन क्यार।
तोनेउ हड्डी अन्न पिसिबे का, दोही फेर भये तैयार। ११४॥
जी हुजूर की टुकड़ी लैके, जुरे अमीरन के दल आय।
रकम बढ़ावैं शान जमावैं, बैठे कुर्सिन तोंद फुलाय॥ ११५॥
जी हुजूर राजा वा बाबू, कुछ जमींदार और सहुकार।
टुकड़े खोर सङ्ग कुछ लैकैं, अपने गुट्ट करैं तैयार॥ ११६॥
वोट लेन हित सीधे बनिगे, दौड़े फिरैं दुवार दुवार।
वोट दलालन का रुपया दै, इज्जत लैय तुम्हारी यार॥ ११७॥
अब मोटर रायी दौड़ाये, सरी न काम किसानन क्यार।
इनहिन सब मिलि विपति बढ़ाइन, घरणी सांगे धरम दुवार ११८
दाना २ बर का हरिगा, रहो न देहं सूत का दाम।
भूखे मरें किसान देश के, लरिका घूमें नांग उघार॥ ११९॥
मिली मदंइ है माटी मां, डोलैं बिना पिछौरिन नारि।
उठो वीरवर पट्ट खोलो, देखौ दोनों नैन उघारि॥ १२०॥
रत्ती भर को सुक्ख रह्यो ना, बढ़कै हुयगो कष्ट अपार।
घी, दधि, दूध, अन्न वा माठा, सारो लुटगौ सरे बजार॥ १२१॥
कपड़ा, लत्ता, छपरा, छानी, उठिगे खड़हर रहे दिखाय।
सूखा, पाला, अति वर्षा ने सारो चौपट दियो कराय॥ १२२॥
भूमी हिली प्रलय भौ जग में, कांपे शेषनाग भगवान।
हा हाकार मच्यो भारत में, बिलखे रोय मजूर किसान।१२३

तबहूँ पञ्च येई पर बञ्ची, बैठे बने रहे महराज ।
कौन दुक्ख इन मेटो तुम्हारो, सोचौ जरा किसानौं आज । १२४ ।
अपना गोश्त शराब उड़ावैं, देखैं नाच विदेशिन क्यार ।
पियें शिगार मस्त बनि घूमैं, दुखिया बिलखैं जार बेजार ।१२५।
अपना फूलके कुप्पा हुइगे, तुम्हरी लीन्हीं आंत नुचाय ।
बार २ मेम्बरी को दौरें, पर की गाय गोलैंदा खाय ॥ १२६ ॥
हमैं बताबो सर ऊँचा करि, अबतौ मोटर रहे घुमाय ।
बिपति देश पर जब २ आई, तब कब छाती दई लगाय ।१२७।
विपति किसानन पर जब आई, सारी प्रजा गई अकुलाय ।
या कौ आँसू इन डारो ना, चुपका रह गए मूड़ लचाय ॥१२८॥
बने पञ्च मेम्बर वा राजा, सारे रहिगे माथ झुकाय ।
आड़े आई कांग्रेस तब, अपनी छाती दीन लगाय ॥ १२९ ॥
बीर जवाहर नाहर गरजे, सत्याग्रह को शङ्ख बजाय ।
बड़े महात्मा जी आगे को, पल्टनि कूँच दई करवाय ॥ १३० ॥
उड़ो तिरङ्गा प्यारा झण्डा, फर फर आसमान फहराय ।
सत्याग्रही सूरमा गरजे, रण का डङ्का दीन बजाय ॥ १३१ ॥
तनिकौ शङ्का जिन मानी नहिं, कालहु गयो सनाका खाय ।
लाठी डण्डा खाय पुलिस के, जेलन अलख जगाये जाय ॥१३२॥
शीश हथेली पर धर बीरन, दई घर तक की सुरति बिसार ।
पुत्र स्त्री की ममता तजि, जग हित त्याग दियो घरबार ॥१३३॥

जिनके सत्य तेज के आगे, भागे अत्याचारी हार ।
आन बान हिय दुख के पर्वत, माने राई के उनिहार ॥ १३४ ॥
धन धरती गई जुरमाने मां, ज्यादा हाल कहो न जाय ।
तबहूँ डिगे वीरवर नाहीं, हर दम आगे पड़े दिखाय ॥ १३५ ॥
अत्याचार बहुत विधि हुइगे, ई सब मेम्बर रहे हमार ।
तनकौ लाज आज आवत नहिं, मांगत वोट किसानन क्यार ।१३६।
चापलूस पन्थी ते हरदम, काम चलावें चुगिल चबार ।
देश नशावन के कारण यह, बनिगौ जैचन्दी दरबार ॥ १३७ ॥
धन्य विभीषण का भैया यो, पहिले खूब रहियो हुशियार ।
बेंट कुल्हाड़ी को बलि नाशै, अपनै कर दे बंटाढार ॥ १३८ ॥
घर के भेदिन का संग लैके, कुछ शाही नौकर बदकार ।
घोर दमन का चक्र चलावत, फैलो हाहाकार अपार ॥ १३९ ॥
दमन हेतु कानून बनावत पञ्च प्रपञ्च मेम्बर यार ।
शान्ति मूर्ति गांधी बाबा को, दीन्हेनि तुरत जेल मां डार ॥१४०॥
उमड़ीं नदियां कहुँ लोहुन की, गोलिन बरस्यो मेघ अपार ।
अन्धा धुन्ध धुआं मा चमकी तलवारैं बिजली अनुहार ॥१४१॥
कहुँ मशीन गनैं हहरानी, प्रलय घोष करि शब्द अपार ।
टापैं खटकैं कहुँ घोड़न की, कहुँ बन्दूकन की झनकार ॥ १४२ ॥
तोप भवानी कहुँ कहुँ झूमैं, लाली पगड़ी करैं बहार ।
कहूँ फटाफट हन्टर फटके, कहुँ २ भई डन्डा की मार ॥ १४३ ॥

लाठी टूटी कहुँ खोपड़िन मां, कहुँ कहुँ मुण्ड चढ़े बलिहार।
जगह जेलखानन की कासी, रही न राई के अनुहार ॥ १४४ ॥
पैसा सरकारी फूंको गा, बेई मेम्बर रहे तुम्हार।
अबहूँ वोट मांगते घूमैं, अपने दोनों हाथ पसार ॥ १४५ ॥
इनकी करनी कहां लौं बरनौं, इन सब चौपट दियो कराय।
उठो किसानों करो सङ्गठन, इनको नीचे देहु गिराय ॥ १४६ ॥
देश तुम्हारे जिन दुख झेलो, तिनको मेम्बर देउ बनाय।
हल्ला बोलो कहि भारत जय, माहिल बंश नाश ह्वै जाय ॥१४७
आन देश रोही पावें ना, उनको सुन लो कान लगाय।
रोब दाब में भूलि न जाना, उनको सीना देहु अड़ाय ॥ १४८ ॥
हक तुम्हारे जिन मारे हैं, तिनका दै देव साफ जवाब।
खून चुसैयन का फटकारो, अपनी रक्षि देहु अब आब ॥ १४९
उनके मारे मारे फिरत हैं, पैरोकार बहुत बदकार।
कितनेव कलम सूर पटवारी, और कुछ जमींदार सहुकार ॥१५०॥
गोड़इत चौकीदार फिरत हैं, जिलेदार सांड़नी सवार।
खून पियन का चसका परिगा, जालिम दुष्ट चोर मक्कार ।१५१।
जेल इजाफा बेदखली की, तुमका धौंस दिखैहैं आय।
सब विधि चकना तुमका दिया है, कैसेव कुर्सी देव बिठाय ।१५२।
लल्लो चप्पो बहु विधि करिहैं, जोरिहैं बहुत भांति ब्यवहार।
मालिक रैयत के नाता की, गहिहैं महिमा अपरम्पार ॥ १३५ ॥

सरकारी दरबारी बातैं करिहैं, तुमते झौंकि बचारि।
कोई कोई लालच दी हैं, अपनी जेबन का खनिकारि ॥ ५४ ॥
कोई ब्राह्मण बनि जनौ दिखैहैं, कोइ कुर्मी को वंश बताय।
कोइ बैरिस्टर कोई मिनिस्टर, कोइ ठकुराई रहे झलकाय ।१५५।
हिंदू सभा किसान पार्टी, जफड़ी कितनिव लइं बनाय।
धर्म सनातन के खम्भा बनि, जाली सिक्का रहे चलाय ॥१५६।
या को जाल चलन पावै ना, किसानों सावधान ह्वै जाव।
धारि तिरङ्गा कर में झण्डा, हल्ला बोलि मर्द बन जाव ॥१५७॥
हा हा कार बोलदो जय मां, देश के द्रोही जांय नशाय।
जे जे दलाल भांजी मारैं, तिनके वंश नाश ह्वै जांय ॥ १५८ ।
धर्म हेत जो कष्ट सहोंगे, कागा गवै हाड़ लै जांय।
चुनैं पञ्च परमेश बराबर, सीधे स्वर्ग धाम को जांय ॥ १५९ ।
हुकुम गांधी का टारयौ नै, दुश्मन हाथ मींजि रहि जांय।
मनकी मनमें उनके रह जांय, घरमां बैठि रहें खिसियाय ।१६
मनुज सचाई के बिन सूनो, सूनी बिन केवट की नाव।
पंच बिना पंचायत सूनी, सूनो सांच पंच बिन गाँव ॥ १६१
नीतिमान यह देश रहो है, कहते वेद शास्त्र सब गाय।
हिंदुस्तान के वीर किसानों, अपनो लीजौ लाज बचाव ॥ १६२ ।
सीन रोप्यो जिन गोली पर, हंसि २ गर्दन दई कटाय।
सुनो सिपाही कांग्रेस के, लेहु देश को धर्म बचाय ॥ १६३

कृषक विरोधी दल के ऊपर, गेरों बीर गाज अगेय ।
बचन देश द्रोही पावैं ना, अबकी सभी खत्म ह्वै जांय ॥ १६४ ॥
जाली सुधार आप रहयो हैं, बीरो बिनती सुनो हमार ।
भेजि सुभट दो कांग्रेस के, सारो जाल करें बेकार ॥ १६५ ॥
कठिन मोर्चा पञ्चायत है, भेजो सुभट कांग्रेस क्यार ।
तोंद फुलाए जो बैठे हैं, मौजें रहे मजे में मार ॥ १६६ ॥
छीछा लेदर इनकी कर दो, तस्मा रहे न बाकी यार ।
बिन औषधि के बलाय टारौ, टूटे जूना, बिना बयार ॥ १६७ ॥
स्वतन्त्रता के प्रेमी बन कर, करो गुलाली का संघार ।
आज़ादी के चुनो पुजारी, जी हुजूर को देव निकार ॥ १६८ ॥
सोचि समुझि कै वीर किसानों, देव भारत का भार उतार ।
पहुँच के पॉलिङ्ग की गङ्गा पर, फिर लेव सत्य धर्म निरधार १६९
वोट कांग्रेस के मेम्बर को, निधरक होकर दीजौ डार ।
खबर बिलायतलौं यह भेजो, को है भारत में सरदार ॥ १७० ॥
सम्हरे रहियो या मोर्चे पर, अबकी बाजी लगी तुम्हार ।
अवसर चूके कछु होइहै ना, फिर पछतै हो बारम्बार ॥१७१॥
हितू किसान के चुनि हौ जो, सम्हरे काम किसानन क्यार ।
तुम्हें ज्ञान ईश्वर ने दीन्हों, परखौ ख्वांट और खरदार ॥१७२॥
एक गद्दा कुर्सिन में लोटे, एक जेले में करे बहार ।
एक खून तुम्हरो पीवत हैं, एक जुर्माना सहे अपार ॥ १७३ ॥

एक हुकूमत गावत आवे, एक बनावे काम तुम्हार ।
एक घिनाप गरीबन को लखि, एक किसानन का आधार ।१७४।
एक तुम्हें धमकावत आवैं, पाकें सहैं जेल मां मार ।
कौन हितू इन दुइमां तुम्हरो, देखो दोनों आंख उघार ॥ १७५ ॥
बजिगौ डङ्का कांग्रेस को, ज्वानौ सावधान हुइ जाव ।
बचन बिरोधी कोइ पावैं ना, सब का खोदि २ धरि लाव ॥१७६॥
जागो उठो देश हित देखो, छोड़ो निज गफलत का साथ ।
एकौ बोट न द्रोही पावें, ऊंचो हो भारत का माथ ॥ १७७ ॥
जोश किसानो बा जौहर को, अपने आजु देव दिखलाय ।
मिलै खून में खून लहिर के, पानी पानी में मिल जाय॥ १७८ ॥
एकै माता के जाये हो, देश की लाली लेव बचाय ।
मारू करखा अब बाजन देव, दुश्मन हाय २ चिल्लाय ॥ १७६ ॥
सदा न मानुष को तन पैहो, मिलि है सदा न दुखिया देश ।
न्याय समर फिर नाहीं रैहे है, ना फिर रहे कपटका वेश ।१८०
सत्य धर्म पै जो डट जे हो, जावे नरक एक ना केश ।
जीवत नाम होइ दुनियां में, मरे न दुक्ख रहे लवलेश ॥१८१॥
कर मरदाना बाना धारो, झण्डा लेव तिरङ्गा हाथ ।
सुमिरन करके गुरू गांधीका, भारत मातहिं नावहु माथ ॥१८२॥
साथ तुम्हारे मरें जियें जो, चलिये आज उन्हीं के साथ ।
बीर जवानों औ मरदानों, देश की लाज तुम्हारे हाथ ॥ १८३ ॥

सूर समर करनी कर डारैं, कायर करत रहैं बकवाद।
समर सकाना कायर माना, भजे जनाना तज मर्याद ॥ १८४ ॥
तिनपै गाज गोसइंया गेरे, जिनते देश होय बरबाद ।
मर्द का बच्चा है जग सोई, अपना देश करे आज़ाद ॥ १८५ ॥
भूलि याद जो अपनी जावें खाली रहे देश की याद ।
ऐसे मेम्बर भेजो चुन कर, सारे दुक्ख होंय बरबाद ॥ १८६ ॥
बे लगाम के पञ्च चुने जो, फेर छुरी देश के शीश।
वही बिभीषण को वंशज है, उससे भले हैं भालू कीश ॥ १८७ ॥
देश रसातल को ना जावे, बीर जवानों लेव बचाय ।
हिम्मत हिन्द देश के बासी, बन मर्दाना देव दिखाय ॥ १८८ ॥
त्याग कुटिल कूरन के दल को, कांग्रेस बल देव बढ़ाय।
सूर सिपाही पंच बनावो, बिगरी सबै बात बनि जाय ॥१८९॥
बीर किसानों यही समय है, अपनी करतब देहु दिखाहु।
देश हेतु जिन प्राण की बाजी, अपनी दीन्हीं आप लगाय ।१९०।
पुरुष सिंह को धर्म निबावहौ, कन्धे कन्धा देव भिड़ाय।
आन बान की बेला आइ, देश बिरोधिन देव छकाय ॥१९१॥
अकड़े रहे ऐंठ में सूखे, तिनके छक्के देव छोड़ाय ।
जननी दूध सफल करि डारौ, तन से जोंके देव छोड़ाय ॥१९२॥
खून मांस जिन तुम्हरो चूसो, तिनको रोना देव रुलाय।
हक बिरोधी जो मेम्बर हैं, तिनकी कुर्सी लेव छिनाय ॥१९३॥

ध्यान तुम्हारो करैं न कबहूँ तिनको सीख देव सिखलाय।
काल कलेवा सब कोऊ है, को अमरावति आओ चबाय ॥१६४॥
बीर देश की लाज न जावे, चाहे प्राण रहे चह जांय।
देश धर्म हित तजौ देह भी, गे गीता मां कृष्ण सुनाय ॥ १६५ ॥
बैंट कुल्हाड़ी के सब फूँको, जैयचन्द वंश नाश ह्वै जाय।
देश उन्नती का जो कांटा, तिन्हैं पीस कर देहु भगाय ॥ १३६ ॥
चूक न जइयां यह मौका है, दो चापलूसी को मजा चखाय।
बेगति की वांसुरी बजावैं, तिनकी गति तुम देव बनाय ॥१६७॥
पंच बने शोभा की खातिर, तिनकी शोभा लेहु छिनाय।
जिनके हृदय देश की सेवा, तिनको मेम्बर देव बनाय ॥१६८
पूंछ हलावैं जे रहि २ के, तिन कुकरन का देव भगाय।
सिंह सरीखे निर्भय गर्जैं, तिनको कौंशिल देव पठाय ॥ १६६ ॥
हम स्वतन्त्रता के हामी हैं, यह दुनियां में देव दिखाय।
देश को क्लेश देख कर जिनको, नेकौ जोश न लोहू खाय ॥२००॥
जिनके बञ्जर ऊसर हियमां, देश प्रेम नाहीं हरियाय।
जिनके पथरासी आंखिन में, रोष ललारी ना गै धाय ॥ २०१ ॥
जननी काहे ते सुत जन्मे, मूढ़ न गर्भ गिरे खसियाय।
जियरा धक २ जिनके होवैं, कोरी बातें लेंय बनाय ॥ २०२ ॥
पटिया मांग सँवारे बैठे, वाजिद अली शाह की नांय।
देश धर्म ना मन मा मानैं, गंगा पैर झूठ की जांय ॥ २०३

गुरू पीर याकौ ना मानैं, लीन गुलामी का अनुशाय।
वेई जनानन की करनी ते, भारत मात रही अकुलाय ॥ २०४ ॥
वीर किसानों धर्म निबाहो, धरती न्याय जान सध जाय।
बोल महात्मा गांधी की जय, नामर्दों का देव भगाय ॥ २०५ ॥
लाज बचाओ भारत मां की, जननी बार २ बलि जाय।
जो पक्की पञ्चायत होवे, तौ स्वराज्य का ब्योंत दिखाय ॥ २०६॥
यह खुशामदी दल जो भारौ, तौ टरि जावे सभी बलाय।
वोट कांगरेस को देने में, रखियो कछू न कसर उठाय ॥ २०७ ॥
जीत कौंगरेस जो जावेगी, तो फिर जीत तुम्हारी आय।
परेब मुरौवत मुरकाये मा, तौ फिर बाजी दिहौ गवांय ॥ २०८॥
लाली राखौ अपने मुख की, लेहु देश की लाज बचाय।
लाला बाबुन की पल्टन को, दो आटे का भाव बताव ॥ २०९ ॥
सारी किम्मति हिम्मति लैके, अपनी करनी देहु दिखाय।
देहु गिराय देश दुश्मन दल, देश भक्त दल देहु बढ़ाय ॥ २१० ॥
मोहरा मारो अबकी बढ़िकै, ज्यानौ कीर्ति अमर ह्वै जाय।
देश तुम्हारा स्वतन्त्र होवे, जाय गुलामी चिन्ह बिलाय ॥२११॥
सुयश तुम्हारो चारों युग लौं, गावैं कवि गण छन्द बनाय।
नाशवान दुनियां में यारों, अमर कहानी यह रहि जाय ॥२१२॥
देश बिरोध भला नाहीं है, बरु मर जाय जहर को खाय।
नर चोला को धर्म यही है, कुछ करनी कीरति करि जाय ॥२१३

बोट देश के हित जो देहैं, ताको भला करें भगवान।
स्वारथ हेत बोट जो देहैं, ताते नाहिं देश कल्यान ॥ २१४ ॥
देश नसैहौ तौ नसि जैहौ, पैहौ कहूँ न ठौर ठिकान।
मान तुम्हारो तबहीं रहि है, जब रहि जाय देश को मान २१५
देश तुम्हारे मा हित तुम्हरो, रखियो अपने मनमें ध्यान।
भूलेव सपनेव मां ना करियो, दुष्ट अधर्मन ते पहिचान ॥ २१६
हानि देशकी जो करि डारैं, ते कर दीहैं तुम्हारिउ हानि।
देश के द्रोहिन का पहिचानौं, कांग्रेस पर देंय न कान ॥ २१७
और महात्मा की आज्ञा से, स्वारथी नहीं करें सन्मान।
इनके करिया मुंह कर दीन्हयो, मनमां खूब लेव पहचान ॥२१८
बिना आब को मोती फीको, फीको है पानी बिन ज्वान।
पानी उसमें कहां भला है, जिसको नहीं देश का ध्यान ॥ २१९
चूर गुमान मान में भूले, उसे न प्यारा हिन्दुस्तान।
ऐसे मेम्बर बस ऐसे हैं, गीदड़, कागा स्यार समान ॥ २२०
चूकि नजइयां वीर किसानो, उनके ऐंठि दियो तुम कान।
देश भक्त वोटर गण करियो, देश भक्त को बोट प्रदान ॥२२१
अन्तिम बिनती है शर्मा की, दै कर कान मित्र सुनि लेव।
हिन्दुस्तान के वीर किसानों, जग में नाम अमर करिलेव ॥ २२२
आटमपुर पुखरावां वालो, जल्दी सावधान होइ जाव।
रामस्वरूप रूप पहचानों, तौ रहु जाय बोझ गरू आव ॥२२३

द्रापूर अकबरपुर गढ़ पर, डाक्टर डटे मुरारीलाल।
देख कै दाढ़ी अब बुढ़ऊ की, दुश्मन होइगे हाल बेहाल॥ २२४
केरो संगठन अब आपस में, ओ भाई मजदूर किसान।
देव वोट इस महारथी को, द्रोही पिस कर बने पिसान॥ २२५
कानपूर बिल्हौर निवासी, अब की खूब लेव पहचान।
वेंकटेश, लक्ष्मी पहिचानौ; वीरो खूब करो घमसान॥ २२६
रिश्तेदारी व्योहारी सब, यह मक्कारी देव बिसार।
चिकनी चुपड़ी सुनौ न बातें, सबको साफ देव फटकार॥ २२७
वीरजवाहर की आज्ञा सुनि, गांधी जी का हुकुम बजाय।
८ फरवरी की पालिंग पर, सारी ताकत देव लगाय॥ २२८
देश मान अरु शान आपकी, सारी जग जाहिर ह्वै जाय।
विजय दुन्दभी बजै आपकी, कीरति वेलि अमर ह्वै जाय॥ २२९
आल्हा छन्द कह्यो शर्मा ने, वीरो लेव चित्त में धार।
सारे गांवन वा पुरवन में, या को खूब करौ प्रचार॥ २३०

सैनिकों के प्रति-

भाइयो !

आप सब का रामा जी के जोशीले आल्हा छन्द का अनुभव है कि जिसके सुनने से मुर्दों में भी जान आती है। आपको चाहिए कि आप सब भाई किसानों में इसका खूब प्रचार करें, यही मेरी विनम्र प्रार्थना है।

विनीत:—

त्रियुगी नारायण शुक्ल,

कांग्रेस सरदार कौमी सेवादल-मण्डल

बैरी अकबरपुर।

निवेदन

ग्रामीण भाइयो आपको मेरे आल्हा की विशेष रुचि रहती है इसीलिये लिये मैंने कई वर्ष पहले (श्रद्धावलिदान) नामक पुस्तक लिख कर आपकी सेवा में भेंट कीथी। गत असेम्बली के चुनाव में कानपुर ज़िले के प्रसिद्ध कार्य्यकर्त्ता पंडित गङ्गासहाय जी चौबे ने मुझे चुनाव पर आल्हा लिखने की अनुमति दी परन्तु प्रेस एक्ट की सख्तीके कारण उस समय वो पुस्तक छप न सकी अब फिर कुछ सज्जनों ने सलाह दी कि फिर कुछ रद्दो बदल कर ज्यों की त्यों आप सब की सेवा में भेंट करता हूँ आशा है कि आप इसे अपना कर मेरे उत्साह को बढ़ावेंगे।

—निवेदक—

मनीराम शर्मा,

नौरङ्गाबाद, पोष्ट कल्यानपुर।

(कानपुर)

समर्पित

से

जिनकी प्रबल श्रद्धा वा प्रेम तथा सहायता से मण्डल-
कांग्रेस कमेटी सुचारु रूप से अपना काम चलाती है उन्हीं
पं० मनीराम जी शर्मा अवस्थी टिकरा तथा श्री० ठाकुर
दिलदार सिंह जी भट्ठे वालों के कर कमलों में यह पुस्तक
सादर समर्पित है।

आपका:—

मनीराम।